Year-5 Volume: III, July-September, 2023 Issue-19 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

9. हिंदी पत्रकारिता : वर्तमान चुनौतियां एवं समाधान

डॉ.संजीव कुमार
सहायक प्राध्यापक
श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भिलाई
Email: ssanjeevmzp@gmail.com

शोध सार

हम सभी हिंदी को अपनी राष्ट्रभाषा मानते हैं। राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस पर दूसरी भाषाओं को खूब कोसते भी हैं। पर यही कोसने वाले लोग हिंदी विषय के विद्यार्थियों को नौकरी नहीं देना चाहते। देश में 44% लोग हिंदी बोलने और जानने वाले हैं। हिंदी के बलबूते ही बॉलीवुड अरबों खरबों का व्यापार करता है। हिंदी पत्रकारिता भी उन्हीं में से एक है। देश में सबसे ज्यादा हिंदी भाषा में ही समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं और समाचार चैनल भी सबसे ज्यादा है इसी भाषा में आमदनी प्राप्त करते हैं। परंतु न जाने फिर भी क्यों हिंदी भाषी हमेशा अपने ही देश में दोयम दर्जे के नागरिक की तरह देखे जाते हैं। हिंदी भाषा के पत्रकारिता की वस्तुस्थिति तथा उससे उपेक्षित पत्रकार एवं इसमें व्याप्त कई बुराइयों की पड़ताल इस शोध के द्वारा की गई है। हिंदी भाषा की पत्रकारिता का एक गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। पर क्या वजह है कि आज हिंदी पत्रकारिता दिन प्रतिदिन क्षीण होती जा रही है।

मुख्य शब्द – हिंदी भाषा, हिंदी पत्रकारिता, अनैतिकता, उपेक्षा, भागीदारी।

प्रस्तावना

हिंदी भाषा के नाम पर सरकार एंव साहित्यकार खूब बड़े बड़े आयोजन करते है परन्तु आयोजन सीधी से निचे उतरते ही अंग्रेजी बोलने लगते है। बालीवुड स्टार जिस भाषा के दम पर जी खा रहे है सार्वजानिक स्थानों पर वे भी हिंदी नहीं बोलना नहीं जानते ।यही लोग वे है जिन्होंने हिंदी भाषा की गरिमा को गिरा रखा है ।हमारी मीडिया का भी यही हाल है। रिपोर्टर हिंदी में लिखे बोले पर उसे साक्षात्कार अंग्रेजी में देना पड़ता है । यह सब सिर्फ इसलिए है ताकि भारत के वे अनगिनत विद्यार्थी जो पिछड़े समाज से है ,जिन्होंने ने बमुश्किल हिंदी माध्यम से अपनी शिक्षा पूरी की है उन्हें इन पेशों में आने से रोका जा सके। यही कारण है की हमारी मीडिया पर चापलूसी का तमगा लगा हुआ है। आज मीडिया पर खेमेबाजी और दलाली का शर्मनाक आरोप चिपक चूका है उसका हासिल ये है की हमारी मीडिया 195 राष्ट्रों की सूचि में मीडिया स्वतंत्रता सूचकांक में 133 स्थान पर है ।[1] सरकार सच से डरी हुई है ।पत्रकारिता की परिभाषा में हमें अब तक यही पढाया गया है कि एक दुसरे से हालचाल करना,नए सूचना की जिज्ञासा ही पत्रकारिता है। पर अब पत्रकारिता इससे कही आगे बढ़ चुकि है। डॉ अर्जुन तिवारी कहते है 'पत्रकारिता अब मिसन से कमीशन की ओर बढ़ चूका है'।मीडिया की ताक़त को आज सभी ताक़तवर लोग समझते है जैसे -राजनेता, व्यापारी, कलाकार और शिक्षित समाज (आदिवासी और निर्बल को छोड़कर)।

---

[1] कुमार,रविश. (2019). *बोलना ही है* –पृष्ठ -7

The Asian Thinker

Year-5 Volume: III, July-September, 2023 Issue-19 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

शोध विधि – प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक विधि पर आधारित है तथा शोध हेतु द्वितियक आकड़ो का प्रयोग किया गया है।

हिंदी पत्रकारिता -

30 मई 1826 को कलकत्ता में वकालत कर रहे कानपुर के वकील जुगल किशोर सुकूल (शुक्ल) ने हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र उदन्त मार्तण्ड का प्रकाशन शुरू किया। वह इसके संपादक भी थे। अपने सम्पादकीय में जुगल किशोर ने लिखा कि हालांकि अंग्रेजी, बंगाली और फ़ारसी में समाचार पत्र कई हैं, ऐसे प्रकाशन उन तक ही सीमित हैं जो ये भाषाएं जानते हैं. एक ऐसे समाचारपत्र की ज़रुरत है जिसे हिंदुस्तानी खुद पढ़ सकें।
.[2]बात स्पष्ट थी हिंदी पत्रकारिता कि उत्पत्ति भारतवासियों की आत्मा की आवाज़ थी।क्योकि जिस दौर में जुगल किशोर जी ने हिंदी पत्र की नींव रखी थी उस दौर में अंग्रेजी हुकूमत अपनी पूरी शक्ति से इस भाषा से पत्रिका के प्रकाशन पर नज़र गडाए हुए थी ,क्योंकि वह जानती थी की हिंदी हिन्दुस्तानियों की आत्मा है और फिर वही हुआ जिसका उसे डर था। हिंदी पत्रकारिता ने अंग्रेजों की नींद हरम कर दी।

पर आज हिंदी पत्रकारिता कई चुनौतियों से घिरी हुयी है,जिन्हें हम निम्न बिन्दुओं द्वारा रेखांकित कर सकते है –

- भाषा
- विज्ञापन
- अनैतिकता
- भागीदारी की उपेक्षा
- कर्मचारियों की उपेक्षा

1.भाषा

हिंदी भाषा जिसे हम अपनी मातृ भाषा कहते है यह आज के पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मेरठ और उसके आस-पास की बोली थी। लेकिन भारत के उत्तर, मध्य और पूर्व के कुछ इलाकों में विस्तार की प्रक्रिया में उस पर ब्रज के साथ-साथ अवधी, फ़ारसी और उर्दू का भी असर दिखा। चूंकि हिन्दी की बोलियां या उपभाषाएं प्रकृत से आई हैं, इसलिए प्राचीन भाषा संस्कृत का प्रभाव भी इस पर स्वाभाविक है।[3] देश भर से हिंदी भाषा में आज कुल 46827 पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित होती है जो की भाषा की दृष्टि से देश में पहला स्थान रखता है जो की अंग्रेजी भाषा में 14365 से कहीं अधिक है।[4] पर

---

2 https://hindi.newslaundry.com/2018/09/21/part-2-hindi-journalism-in-19th-century-udant-martand

3 https://hindi.newslaundry.com/2018/09/21/part-2-hindi-journalism-in-19th-century-udant-martand

4 https://brainly.in/question/29687783

आज इसकी उपेक्षा से हम बचे नही है। पत्रकार संजय कुमार सिंह लिखते है कि 'हिंदी बोलने वाले चाहे जितने भी हो हिंदी में भविष्य नही है यह मान लेना चाहिए।देश में 40 %हिंदी बोलने वाले है और 10 %अंग्रेजी फिर भी अंग्रेजीवाले आज छाए है।'[5]

यह सही है की देश में सबसे ज्यादा हिंदी अख़बारों का सर्कुलेशन होने के बाद भी एक भी मौलिक समाचार एजेंसी नही है। 'भाषा' और 'वार्ता' दोनों एजेंसियां अनुवाद के सहारे चलती है और इनका अनुवाद ऐसा होता है कि ज्यादातर हिंदी के अखबार भी दोनों की सेवा नही लेते। एक की अंग्रेजी और दुसरे की हिंदी की सेवा लेकर काम चलाते है। मालिकान अनुवाद की एजेंसी चला रहे है और ग्राहक को उसकी सेवा पसंद नही ,फिर भी एजेंसी चल रही है –लेकिन कब तक चलती रहेगी ?[6]

2.विज्ञापन

आज जनसंचार के सभी माध्यम विज्ञापन पर निर्भर है ,चूँकि समाचार पत्र की एक प्रति का प्रकाशन खर्च उसकी विक्री मूल्य से आठ – दस गुना ज्यादा आता है इसलिए इसे चलने के लिए विज्ञापन का सहारा लेना एक प्रकाशक के लिए जरुरी हो जाता है।कमोबेश यही स्थिति संचार के सभी माध्यमों पर लागु होती है यही कारण है की आज एक पत्रकार को समाचार के साथ विज्ञापन भी लाने को कहा जाता यही से पत्रकारिता मिसन से कमिसन बन जाती है।

एक आकडे के अनुसार देश भर की मीडिया प्रति वर्ष विज्ञापन से 80,123 करोड़ प्राप्त करती है।दृश्य –श्रव्य माध्यम से जहाँ 30 ,43 6 करोड़ की आमदनी होती है वह प्रिंट मीडिया सलाना 20 हजार करोड़ का व्यापार करती है।[7]विज्ञापन से हो रही यही आमदनी समाचार की स्थिति को बिगाड़ रही है ,जिसकी वजह से वाजिब खबर आम जन से दूर है और गैवाजिब खबर बार – बार परोसा जा जाता है। यही वजह है कि लालच वश या अपनी नौकरी बचाने के कारण पत्रकार सही सूचना तक नही पहुँच पाते।

जनसंचार के नियमानुसार मीडिया की किसी भी विधा में मात्र 40 % विज्ञापन की ही अनुमति है परन्तु आज व्यावसायिक संचार में चतुर प्रबंधन विभाग बड़ी चतुराई से समाचार पत्रों पर 'जैकेट' हाफ जैकेट लगा रही है ,वही टी. वी. में स्पांसर वाले विज्ञापन भी बड़ी चतुराई से कार्यक्रम के कोने –तिकोने करके दिखाए जाते है।

3.अनैतिकता

आज समाज की हर विधा में नैतिकता की कमी है। लेकिन दुःख की बात ये है की जिसपर समाज को नैतिक बनाने की जिम्मेदारी है वह खुद आज अनैतिक हो चूका है। विज्ञापन और राजनीतिक संरक्षण के लिए जनसंचार संस्थाए अपनी नैतिकता को बच रही है। यही कारण है की आज पत्रकारों पर दलाली और अनैतिक होने का आरोप लगता रहा है

---

[5] सिंह, संजय कुमार.(2017). *पत्रकारिता जो मैंने देखा, जाना, समझा*. नई दिल्ली: एस .के. इंटरप्राइजेज प्रकाशन. पृष्ठ-184

[6] वही ,पृष्ठ -31

[7] https://www.dailymotion.com/video/x7zdcla

Year-5 Volume: III, July-September, 2023 Issue-19 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

।जनरल वी.के. सिंह ने एक बार मीडिया के लिए प्रेस्तीत्युत (वेश्या) शब्द का प्रयोग किया था जिस पर मीडिया से उन्हें माफ़ी मांगनी पड़ी थी। पर सच यही है की मीडिया का बड़ा हिस्सा दरअसल इसी श्रेणी में है।[8]

आज सही न्यूज़ 'पेड न्यूज़' बन चूका है ,वह तो शुक्र है **न्यू मीडिया** का जिसने मेनस्ट्रीम मीडिया की पोल खोलकर रख दी है। आज समाज में **न्यू मीडिया** ने कई आंदोलनों को जन्म दिया है ,जिसने समाज में कई परिवर्तन किए है। सच में न्यू मीडिया आज मुख्यधारा के पत्रकारिता का कार्य कर रहा है ।[9]देश के ज्यादातर मीडिया संस्थान अब लगभग कार्पोरेट हो चुके है। इसमें कार्पोरेट की तमाम बुराइयाँ तो आ चुकी है ,परन्तु पत्रकारों को इससे हो सकने वाली लाभ की कोई संभावना दूर –दूर तक नज़र नही आ रही है। दूसरी ओर ,अख़बारों में पत्रकारिता करने वाले अब भी मिशनरी पत्रकारिता को ही पत्रकारिता मानते है ,जो अब होती नही है या बहुत कम हो गई है।[10]

4. भागीदारी की उपेक्षा

क्या होता यदि रामायण की रचना वाल्मीकि की जगह किसी रहमान ने की होती ? क्यों होगा जब क्रिकेट का उदघोषक (कमिंटेटर) कोई कबड्डी का प्लेयर करे ? पर आज सभी मीडिया में यही हो रहा है , जो की हिंदी पत्रकारिता में कुछ ज्यादा है। आज़ादी के बाद भी मीडिया में दलित / पिछड़े हाशिए पर है ।जहाँ अभी भी सामाजिक स्वरुप के तहत प्रतिनिधित्व करते हुए दलित- पिछड़े को नही देखा जा सकता है। आकड़े बताते है कि देश की कुल जनसँख्या में मात्र 8% होने के बावजूद ऊँची जातियों का ,मीडिया हाउसों के 71 % शीर्ष पदों पर कब्ज़ा है। 85 %दलित –पिछड़े मात्र 2 % ही मीडिया में है ,इसमें दलित नही के बराबर है। मुस्लिमो की भी स्थिति कुछ खाश नही है।[11]

जनसत्ता और अमर उजाला के संपादक रह चुके शंभुनाथ शुक्ल ने 23 जून 2013 को अपनी फेसबुक वाल पर लिखा 'पत्रकारिता और खासकर हिंदी की प्रिंट पत्रकारिता आपको जाहिल और काहिल ज्यादा बनाती है। इसलिए इसका भविष्य बहुत ही उजाला तो नही ही प्रतीत होता है। पहले तो नौकरी पाने के लिए किसी संपादक के रिश्तेदार बनिए अथवा उसकी जाति – बिरादरी की बनिए अथवा किसी नेता से कहलवाइए।[12]

जब कभी दलितों पर अत्याचार होता है तो प्राइम टाइम की बहस में दलित विद्वान नदारद रहते है ,और उनकी समस्या को लेकर ढेरों बहस होती है जो की व्यर्थ साबित होता है। यह बिलकुल उसी तरह है जैसे लोग किसी अंधे व्यक्ति के स्वागत के लिए रंगीन कालीन बिछा रहे हो। भारत विविधताओं का देश है या सभी की समस्या का हल आप

---

[8] सिंह, संजय कुमार.(2017). *पत्रकारिता जो मैंने देखा, जाना, समझा*. नई दिल्ली: एस .के. इंटरप्राइजेज प्रकाशन. पृष्ठ-11

[9] –पृष्ठ-वही

[10] वही ,पृष्ठ -13

[11] कुमार ,संजय (2019) मीडिया में दलित –रश्मि प्रकाशन ,लखनऊ –पृष्ठ -18

[12] सिंह, संजय कुमार.(2017). *पत्रकारिता जो मैंने देखा, जाना, समझा*. नई दिल्ली: एस .के. इंटरप्राइजेज प्रकाशन. पृष्ठ-38

Year-5 Volume: III, July-September, 2023 Issue-19 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

अकेले वातानुकूलित बंगले में बैठकर नही निकाल सकते। क्या होता यदि संविधान निर्माण में भी यह दस्तूर जारी होता ?

5. कर्मचारियों की उपेक्षा

आज हिंदी पत्रकारिता में गेटकीपर ,और प्रूफ रीडर जैसे पद नही के बराबर है। अख़बारों में अब हड़ताले नही होती ,ज्यादातर कर्मचारी ठेके पर रखे जाते है। संपादक का कार्य अब ख़बरें देखना नही ,नफा लाभ देखना रह गया है।[13]संपादक आज दंतविहीन हो गया है ,अखबार में क्या छपना चाहिए और क्या नही यह प्रबंधन विभाग तय कर रहा है। पत्रकारों की तनख्वाह एक मजदूर से भी कम है जिसकी भरपाई समाज को करनी पड़ रही है। यह सच है की पत्रकारिता का उद्देश्य धन लोलुपता नही है परन्तु जब उसके पास इतना धन है की वह अपने कर्मचारियों को भी संतुष्ट रख सकता है तो उसे उनका शोषण नही करना चाहिए। आज पत्रकार धन और मान दोनों के लिए संघर्ष कर रहे है जो की उनकी गरिमा को शोभा नही देता। और हिंदी पत्रकारिता की उपेक्षा की सबसे मार्मिक जो विषय है वह ये कि इसके जनक बाबू जुगल किशोर शुक्ल जी का हम आज तक सही सम्मान न कर सके जो की हिंदी पत्रकारिता एंव हिंदी पत्रकार दोनों के लिए डूब मरने वाली बात है।

निष्कर्ष एंव समाधान

हिंदी भारतवासियों की आत्मा है और उस आत्मा का शरीर हिंदी पत्रकारिता है। यह शरीर ही देश भ्रमण करता है लेकिन आज इसकी आँखों में लोगों को राष्ट्र के लिए वह श्रद्धा वह त्याग नही दिखाई दे रहा है जिसके लिए इसे जाना जाता है। कभी सुखी रोटियों के लिए भी लड़ जाने वाली हिंदी पत्रकारिता आज धन के सागर में डूबकर भी सच बोलने का साहस नही कर रही है। इसकी गरिमा को अगर हमें बचाए रखना है तो हमें इसमे निष्ठा लानी होगी ,हमें नैतिक होना होगा। आज पत्रकारिता को सिर्फ खबर दिखाने तक ही नही सीमित रखना है क्योकि हम यह जानते है की आज ख़बरे बनायीं जा रही है। आज ऐसी पत्रकारिता की आवश्यकता है जो **'सच दिखाने के अलावा सच समझाना और जानना भी सिखाए वही सच्ची पत्रकारिता है'**। क्योकि हम जानते है आज अख़बार और समाचार चैनल अपने – अपने लिए दर्शक / पाठक तैयार कर चुके है , जिसकी बदौलत समाज दो धड़े में विभाजित हो चूका है।

आज आम दर्शक यह आसानी से बता दे रहा है की फलां चैनल फलां पार्टी की है जो की एक अखंड राष्ट्र के लिए उचित नही है। आज हमें यदि हिंदी पत्रकारिता एंव मीडिया को आखिरी पंक्ति के निस्सहाय व्यक्ति के लिए जीवित रखना है तो सबकी भागीदारी (जाति ,धर्म , सम्प्रदाय)सुनिश्चित करनी होगी क्योकि जब डिबेट में सभी लोग मौजूद होंगी तभी वह वह डिबेट सार्थकता तक पहुँच पायेगी अन्यथा सब सिर्फ मतभेद खड़े करने तक ही सीमित रह जायेंगे। अखबार पढने का मज़ा तभी होगा जब कलम शोषित के भी हाथ में होगी ,और तभी समाज निर्णय ले पायेगी की दूध क्या है और पानी क्या ?

---

[13] सिंह, संजय कुमार.(2017). *पत्रकारिता जो मैंने देखा, जाना, समझा*. नई दिल्ली: एस .के. इंटरप्राइजेज प्रकाशन. पृष्ठ-13

सन्दर्भ
कुमार,रविश. (2019). बोलना ही है –पृष्ठ -7
https://hindi.newslaundry.com/2018/09/21/part-2-hindi-journalism-in-19th-century-udant-martand
https://hindi.newslaundry.com/2018/09/21/part-2-hindi-journalism-in-19th-century-udant-martand
https://brainly.in/question/29687783
सिंह, संजय कुमार.(2017). *पत्रकारिता जो मैंने देखा, जाना, समझा*. नई दिल्ली: एस .के. इंटरप्राइजेज प्रकाशन, पृष्ठ-184
https://www.dailymotion.com/video/x7zdcla
कुमार, संजय.(2019). *मीडिया में दलित* लखनऊ: रश्मि प्रकाशन. पृष्ठ -18

The Asian Thinker